Registration No. 1589/2008-09 ISSN. 2347-4491 Impact Factor 2.382

अयन्

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

Patron
Prof. I.S. Chouhan
(Ex V.C., Barkatullah University, Bhopal)

Editor in Chief
Dr. Bindu Bhushan Upadhyay

Executive Editor
Dr. Vikramaditya Rai

Editor
Dr. Vikash Kumar
Dr. Kumar Varun

Volume 7 No. 2 (April-June) UGC No. 49095 Year- 2019

Published by
Lok Manav Samaj Kalyan Sansthan
Aurangabad (Bihar)-824101

IN ASSOCIATION WITH
K.R. PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS
Baba Shopping Complex, Lanka, Varanasi – 05

Scanned with CamScanner

Ayan - *A Refereed Journal, Published by : Quarterly*

©Publisher

ISSN :- 2347-4491
June, 2019

Correspondence Address :
Shri Krishna Nagar, Ahari, Behind Fulman Mandir, Aurangabad (Bihar)
Pin-824101

Mobile No. :- 09931604717, 09473795945, 09389140751, 09889323649
Email- ayanjournal@gmail.com

All rights reserved

*No part of this publication may be reproducted or tranmitted in any means, or stored in any retrieval system of any nature without prior permission. Application for permission for other use of copyright material including permission to reproduce extract in other published works shall be made to publishers. Full acknowledgement of author, publishers and soure must be given. The views expressed in the juorunal "**Ayan**" (Research for All). are not necessarily the view of editorial board or publisher. Neither any member of the editorial board nor publisher can in anyway be held reponsible for the views and authenticity of the articles, reports or research finding. Although every care has been taken to avoid errors or omission,s this publiction is being sold on the condition and understadning that information given in this journal is merely for reference and must not be taken as having authority of or binding in any way on the authors, editors, publishers and sellers who do ot owe any responsibility for any damage or loss to any person, All disputes are subject to Varanasi jurisdiction only.*

Composed by :
Munnu Lal

Printed by :
Jai Durga Jai Luxmi Printers
Shri Krishna Nagar, Aurangabad, Bihar

Published by :
Lok Manav Samaj Kalyan Sansthan
(Reg. No. 1589/2008-09) Aurangabad (Bihar)

Scanned with CamScanner

❖	हरदुआ सड़क से सर्वेक्षित शिव मुख–लिंग प्रतिमा *उमेश चन्द्र पाण्डेय*	237-239
❖	**Archaeological Exploration of Arpa River** *Amit Kumar* *Dr. Devendra Kumar Singh*	240-244
❖	अंग्रेजी शिक्षा व उसका भारतीय जनमानस पर प्रभाव : एक ऐतिहासिक अवलोकन *ऋषि यादव*	245-250
❖	वर्तमान सन्दर्भ में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता *डॉ0 मनोज सिंह यादव*	251-253
❖	**বাংলা কবিতা ও উনিশ শতক** **ডঃ রাজকুমার মণ্ডল**	254-265
❖	सांस्कृतिक सातत्य के वाहक काशी के जल–तीर्थ *डॉ0 सुधीर कुमार राय*	266-270
❖	शुद्धि आन्दोलन की आवश्यकता	271-274
❖	**Assessment of nutrient intake of pre and post operative patients suffering from GIT disorder** *Neetu Yadav* *Prof. Archana Chakravarty*	275-280
❖	योग और अद्वैतवेदान्त में ईश्वर की अवधारणा : एक तुलनात्मक अध्ययन *प्रीति किरण हॉसदा*	281-284
❖	ईरानी परम्परा में क्षथ (क्षत्र) शब्द का अर्थ एवं विकास एक विश्लेशणात्मक अध्ययन *डॉ0 सरोज रानी*	285-289
❖	संयुक्त प्रांत के विभिन्न क्षेत्रो में प्रचलित भूमि व्यवस्था *प्रतिमा कुमारी*	290-293
❖	अंधेरा मेरा ख़ास वतन' – मुक्तिबोध *डॉ. रमेश कुमार गोहे*	294-300

Scanned with CamScanner

अंधेरा मेरा ख़ास वतन' – मुक्तिबोध

डॉ. रमेश कुमार गोहे
सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ0ग0)

उपर्युक्त शीर्षक मुक्तिबोध की एक कविता का अंश है। जिरासे स्पष्ट है कि अंधेरे का बिम्ब मुक्तिबोध को बहुत ही ज्यादा पसंद था। 'अंधेरे में' कविता में तो हम इसका विस्तार फैण्टेसी के रूप में देखते ही हैं । सामान्य तौर पर जो मुक्तिबोध के साहित्य का सूचनात्मक ज्ञान रखने वाले पाठक हैं, वे भी 'अंधेरे में' कविता को जरूर जानते हैं। किन्तु इसके अलावा भी मुक्तिबोध ने अपनी अधिकांश कविताओं और गद्य में भी 'अंधेरे' बिम्ब का प्रयोग मन भर किया है। यहाँ इस शोध आलेख का अभिप्राय 'अंधेरे में' कविता के इतर 'अंधेरे' के बिंब को खोजना है। कवि की दृष्टि म इस बिंब की महत्ता की खोज करना है। कवि को तो कई बिंब प्रिय होते हैं, किन्तु कोई विशेष बिंब भी होता है जिसके इर्दगिर्द उसकी खोज में कवि दृष्टि हमेशा घुमती रहती है। यहाँ मुक्तिबोध क संदर्भ में भी हमारा ध्येय यही है कि 'अंधेरे में' कविता के इतर मुक्तिबोध ने अंधेरे जैसे बिंब का प्रयोग किन–किन कविताओं में किया है। प्रथम दृष्ट्या तो, इसे समेटना बहुत आसान लग रहा था किन्तु इस बिंब को मुक्तिबोध ने अपनी अधिकांश कविताओं में प्रयोग किया है इसलिए हम यहाँ कुछ ही कविताओं को लेने का प्रयास करेंगे।

'अंधेरे में' कविता लिखने के बीच में ही (जैसे कि अंधेरे में कविता का संभावित रचनाकाल 1957 से 62 तक का माना जाता है मुक्तिबोध की एक कविता जो 1959 के बाद लिखी गई थी 'जिन्दगी बुरादा तो बारूद बनेगी हीं' में 'अंधेरे' जैसे बिम्ब का मोह स्पष्ट दिखाई देता है–

"आदतन सिर्फ आदतन
या इरादतन भी,
अंधेरा मेरा ख़ास वतन
जब आग पकड़ता है,
सामने अंधेरे आसमान में पहाड़ टकराते
भीतर के विस्फोटों से सूर्य टूटता है।"1

कविता के इस अंश से स्पष्ट है कि 'अंधेरे' का चयन आदतन और इरादतन दोनों ही रूपों में मुक्तिबोध ने साहित्य एवं कविता लेखन में किया है। इस आलेख में मेरा उददेश्य 'अंधेरे में' कविता के इतर कविताओं में 'अंधेरे' के बिम्ब को खोजना है। हालाकि ये दावा नहीं है कि अपने साहित्य में कविताओं के इतर मुक्तिबोध ने अन्यत्र कहीं अंधेरे का प्रयोग नहीं किया। कुछ कविताओं को ही मैं यहाँ लेने का प्रयास करूंगा। इस क्रम में यहाँ हम 'बारह बजे रात के' कविता को देखना चाहगे जिसका रचनाकाल भी 57 के आसपास है यह कविता बाद में 'उन्मेष' में 1965 में प्रकाशित हुई थी।

"बारह बजे रात के
यूरोपीय सर्दी के धुँधराले कुहरे में लहरदार,
अंधरे के पहरे में रफ्तार
अनमनी गम्भीर उदास पहाड़ियाँ
क्षितिज की साँवली लोहे की भीत पर
अपना सिर टेककर
सोचती सी खड़ी है।"2

इस फैंटेसी का विस्तार आगे व्यापक रूप में होता है। अंधेरे में जो कुछ भी होता है उन सभी रूपों में कविता का विस्तार है।

"कौन हैं वे लोग बोलो, कौन हैं वे लोग, अजी!

Scanned with CamScanner